ऑडियो नंबर-**206**ए कम्पिला ओमशान्ति **18.6.86** प्रातः क्लास

आसमाँ पा लिया है। जहान में तो सब आ जाते हैं। आकाश समानवादी है, ये सारी पृथ्वी भी है और सारा समुद्र भी है। जितने भी पार्टधारी एक्टर्स हैं, सभी हैं। ये सब हमारी मुट्ठी में आ गए हैं। कब? जब तुम्हें पा लिया है। ये कैसे? ये 'तुम्हें' किसके लिए कहा? ये सारी सृष्टि का बीज कौन है? सृष्टि है अनादि और अविनाशी और सृष्टि है साकार। इस साकार सृष्टि का बीज कौन है? इस समूची सृष्टि का बीज है, जो मनुष्य-सृष्टि का बीज है; क्योंकि मनुष्य भी साकार हैं, सृष्टि भी साकार है; लेकिन वो मनुष्य-सृष्टि का बीज इस संसार में प्रत्यक्ष तब होता है जब आत्माओं का जो पिता है- सुप्रीम सोल ज्योतिर्बिंदु शिव, वो उसमें प्रत्यक्ष होता है, परमात्म-पार्ट प्रत्यक्ष होकर बजाता, तब वो प्रत्यक्ष होता है और जब प्रत्यक्ष होता है बच्चों के सामने नंबरवार, तो बच्चे उसको अपनी मुट्ठी में करते हैं, प्यार के आधार पर। प्रीति कहो, योग कहो, याद कहो। पहचानते हैं, मानते हैं और पा लेते हैं। तो अगर सारी मनुष्य-सृष्टि का बीज मुट्ठी में आ जाए, तो जैसे कहेंगे कि सारा वृक्ष ही मुट्ठी में आ गया।

जो बच्चे कहते हैं, बाबा भी वो ही है। बाबा! तुम्हें पाके हम स्वर्ग के मालिक बनते हैं। बाप कहते हैं- बच्चे, मन्मनाभव। तरीका बताया कि स्वर्ग के मालिक कैसे बनोगे। तीन शब्द- मत्-मना-भव। मत् माना मेरे, मना माना मन में, भव माना समा जा अर्थात् मेरे मन के संकल्पों में समा जा। वो तुम अपने अलग से कोई संकल्प नहीं करो। जो बाप का संकल्प सो बच्चे का संकल्प माना संकल्प मात्र भी किसी (प्रकार का) बाप में विरोधाभास न हो। संकल्पों में भी विरोध न हो। वाचा से विरोध और कर्मेंद्रियों से विरोध- ये तो बहुत बड़ी बात हो गई; लेकिन संकल्प भी जो बाप का सो बच्चे का। बात एक ही हो गई।

मनुष्य सब पूछेंगे कि ब्रह्माकुमार-कुमारियों को इस सत्संग में जाकर क्या मिलता है? इस सत्संग में जाकर क्या मिलता है? तो ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ कहते हैं- हम बापदादा से विश्व के मालिक बनते हैं। विश्व का मालिक और कोई बनाय नहीं सकता। कौन बनाय सकता है? क्योंकि विश्व का मालिक बनाय सकता है सिर्फ बापदादा। विश्व के मालिक यह ल.ना. हुए हैं, और कोई हो नहीं सकता। कौन-से ल.ना.? यह ल.ना.। चित्र की तरफ इशारा किया; क्योंकि ल.ना. के चित्र में बाबा के बाजू में दो पेयर्स खड़े हुए हैं- एक बच्चे के रूप में नीचे और दूसरा- नौजवान के रूप में ल.ना. ऊपर, जो एडल्ट हैं। तो नीचे बच्चों की तरफ इशारा नहीं करते थे। जो नर से नारायण बनने वाले हैं, नारी से लक्ष्मी बनने वाले हैं, उनकी तरफ इशारा होता था और गायन भी है- नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी। नर से प्रिंस या नारी से प्रिंसेज बनने का गायन नहीं है शास्त्रों में।

विश्व का मालिक शिवबाबा भी नहीं हो सकता। तुम बच्चे विश्व के मालिक बनते हो। तो तू कहा ही जाता है जो सम्मुख बैठकर बाप से वर्सा लेते हैं। तो वर्सा देने वाला सम्मुख अलग हुआ और लेने वाला

प्रैक्टिकल में अलग होना चाहिए। कैसे? देने वाला कौन और लेने वाला कौन? देने वाला है पारलौकिक बाप, सुप्रीम सोल। तुम्हारा बाप विश्व का मालिक नहीं बनता है। माने किसका बाप? मनुष्य-आत्माओं का। मनुष्य जो हैं, मनुष्यों का बाप प्रजापिता या आत्माओं का बाप? (किसी ने कहा- आत्माओं का) आत्माओं का बाप विश्व का मालिक नहीं बनता है। ऐसे निष्काम सेवा करने वाला और कोई नहीं होता है, सिवाय आत्माओं के बाप के। क्यों? जिनको-2 अपना रथ होगा उनको स्वार्थ ज़रूर होगा, चाहे वो प्रजापिता ही क्यों न हो और ये बात शास्त्रों में भी है। आटे में लून मिसल सच्चाई तो शास्त्रों में भी है। बताया है- सुर, नर, मुनि सबकी यह रीति, स्वारथ लागे करें सब प्रीति। ऐसा कोई मनुष्यमात्र नहीं है- चाहे देवता हो, चाहे असुर हो, किसी कैटेगरी का भी कोई-न-कोई क्यों न हो, स्वार्थ सबको लगा रहता है; क्योंकि सबसे प्यारा होता है अपना शरीर आत्मा को और शिवबाबा को अपना शरीर है ही नहीं। वो सुप्रीम सोल को अपना शरीर नहीं होता, वो तो दूसरे के शरीर में प्रवेश करता है। तो उसको कोई अपने प्रति, अपने रथ के प्रति कामना होने का सवाल ही पैदा नहीं होता। हरेक मनुष्य-आत्मा को अपनी अच्छी सेवा का फल ज़रूर मिलता है। जो कोई कुछ करते हैं भक्तिमार्ग में वा किसी भी प्रकार से, सोशल वर्कर्स को भी फल मिलता है सर्विस का। गवर्मेंट से पगार मिलता है। बाप कहते हैं मैं ही एक निष्काम सेवा करता हूँ जो बच्चों को विश्व का मालिक बनाता हूँ और मैं नहीं बनता हूँ। मैं ही एक माना कोई दूसरा नहीं है निष्काम सेवा करने वाला। तो वो एक कौन है? उसका स्वरूप क्या है? अगर शिवबाबा कहते हैं तो बाबा तो आत्मा और शरीर के मेल को बताया है मुरली में 'बाबा'। "साकार और निराकार के मेल को बाबा कहा जाता है।" (मु.9.3.89 पृ.1 मध्य) बाबा माना ग्रैण्डफादर। तो वो एक बाबा, जो साकार में निराकार है, निराकार और साकार का मेल है, वो एक कौन? क्योंकि एक बिंदी के लिए कहें तो ये बात साबित नहीं होती निष्काम सेवाधारी; क्योंकि बिंदी का पता नहीं लगेगा- कौन-सी बिंदी निष्काम सेवाधारी है। कैसे पता चलेगा? ज़रूर प्रैक्टिकल एक्ट में आएँगे तब ही पता पड़ेगा। तो वो रूप कौन-सा गायन है शास्त्रों में? कोई रूप ऐसा है जो सब देवताएँ स्वर्ग में दिखाए जाते हैं और उस रूप को स्वर्ग में नहीं दिखाया जाता? वो कौन-सा रूप है? शंकर का रूप है बेगरी रूप। उनको सदैव काँटों के जंगल में ही दिखाया जाता है, कभी स्वर्ग में नहीं दिखाया जाता। तो मैं विश्व का मालिक नहीं बनता हूँ, बच्चों को सुखी करके सुखधाम का मालिक बनाकर 21 जन्मों का सुख दे, मैं अपने निर्वाणधाम में वा वानप्रस्थ अवस्था में बैठ जाता हूँ। ये कौन-सा निर्वाणधाम हुआ! अगर शंकर का ही स्वरूप उस निष्काम सेवाधारी का रूप है तो वो बिना शरीर छोड़े परमधाम में कैसे बैठ जाए? इसलिए मुरली में बताया है- "तुम बच्चे परमधाम को भी इसी सृष्टि पर उतार लेंगे।" वो निराकारी स्टेज जो संगठित रूप में तुम बच्चों की बनेगी, वाणी से परे की स्टेज, जिसमें वाणी चलाने की दरकार नहीं रहेगी, वायब्रेशन मात्र से ही एक/दूसरे की बातों को कैच कर सकेंगे। तो ऐसा संगठन इस संसार में, साकार संसार में जहाँ भी होगा, वो सारी दुनिया की दृष्टि में समाया हुआ होगा। जिसका यादगार दिलवाड़ा मंदिर बना हुआ है। वो तपस्या की स्टेज है, आत्मिक स्टेज की स्टेज है। आत्मिक स्थिति में सब नग्न रूप में बैठे हुए हैं माना शरीर का भान नहीं है। जैसे बाबा कहते हैं- मैं रूहानी बाप हूँ।

रूहानी बाप रूहानी बच्चों को बैठ पढ़ाते हैं। वो कोई बिंदु-2 को नहीं पढ़ाता; लेकिन आत्मिक स्टेज में रहने वाला आत्मिक स्टेज में रहने वालों को पढ़ाता है। देह-अभिमानी तो पढ़ाई पढ़ेंगे ही नहीं। सम्मुख भी नहीं आएँगे। तो वानप्रस्थ मूलवतन को कहेंगे। अब वतन जब यहाँ बना लिया इस सृष्टि पर तो उसे मूल कैसे कहेंगे? मूल माना जड़, बीजरूप स्टेज। वो बीजरूप स्टेज सबकी एक जैसी नहीं बन सकती। कोई तो बहुत सूक्ष्म स्टेज में स्थिर होने वाले होंगे और कोई उतनी सूक्ष्म स्टेज में, परे-ते-परे स्टेज में रहने वाले नहीं होंगे; क्योंकि जब परे-ते-परे कहा जाता है तो ज़रूर नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार होता है। तो मैं अपने निर्वाणधाम में वा वानप्रस्थ अवस्था में बैठ जाता हूँ। वानप्रस्थ मूलवतन को कहा जाता है। मनुष्य वानप्रस्थ लेते हैं, बच्चों को सब-कुछ दे करके जा करके सत्संग आदि करते हैं। तो यहाँ बाप वानप्रस्थ लेते हैं तो कहाँ बैठते होंगे? कयामत के समय में, बच्चे जो आत्मिक स्टेज में रहने वाले होंगे, वो कहाँ से बैठ करके देखेंगे सारे विश्व का विनाश? ज़रूर वो स्थान वही होगा जहाँ उसकी यादगार बनी हुई है- माउण्ट आबू।

गुरू करते हैं कि यह मुक्ति का रास्ता बतावे। अब तुम बच्चे जान गए हो कि मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता कोई मनुष्यमात्र कब किसको नहीं बताय सकता। अपने को ही गति-सद्गति नहीं दे सकते माना कोई आत्मा में इतनी ताकत नहीं है, विकारों के बंधन में इतनी आ चुकी है कि आत्मा गति-सद्गति को नहीं प्राप्त कर सकती। गति कहते हैं निराकारी स्टेज और सद्गति कहते हैं शरीर में रहने का भी अनुभव हो और दुःख का अनुभव न हो। साकार शरीर भी रहे और दुःख का अनुभव न हो; लेकिन सुख का अनुभव हो और इस गति-सद्गति की शुरुआत कहाँ से होती है? पहले मन-बुद्धि की गति-सद्गति होगी या पहले शरीर की गति-सद्गति होगी? पहले सूक्ष्म चीज़ तैयार होती है, मकान का खाका पहले बुद्धि में खिंचता है, फिर कागज़ पर बनाया जाता है, फिर स्थूल में तैयार होता है। तो गति-सद्गति की भी शुरुआत, आत्मा जो मन-बुद्धि कही जाती है, उस मन-बुद्धि से इसकी शुरुआत होती है। मन-बुद्धि रूपी आत्मा जब मनन-चिंतन-मंथन में टिकने लगे और देह और देह के संबंधों से उपराम होने लगे तो समझा जाता है कि आत्मा गति-सद्गति की ओर चल पड़ी। जब तक मनन-चिंतन-मंथन नहीं चलता, तो समझो आत्मा डिफेक्टेड है, दुर्गति की ओर है। तो ऐसी सद्गति और गति कोई मनुष्यमात्र नहीं दे सकता। मनुष्य जो भी ज्ञान सुनाते हैं, उसमें कुछ-न-कुछ अपना मिक्स ज़रूर करते। तो मनुष्य मनुष्य को सद्गति नहीं दे सकता, सिवाय परमपिता परमात्मा शिव के, जो कि निष्काम सेवाधारी है। तो जो मनुष्य अपनी ही गति-सद्गति नहीं कर सकते वो दूसरों को गति-सद्गति कैसे देंगे!

बाप आते ही हैं परमधाम से। वो वहाँ का रहने वाला है। तुम बच्चे भी वहाँ के रहने वाले हो। तुमको पार्ट बजाना है, इस कर्मक्षेत्र पर बाबा को भी यहाँ आना है, तुम बच्चों के लिए। जबकि स्वर्ग की स्थापना हो रही है तो ज़रूर नर्क का विनाश होना ही है। अभी तुम जान गए हो शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं। किसके द्वारा? ब्रह्मा द्वारा। ब्रह्मा कहाँ है? जब द्वारा है

तो मीडिया हुआ ना! और मीडिया साकार में होता है या निराकार, आकार में होता है? साकार सृष्टि की स्थापना होनी है या निराकारी, आकारी सृष्टि की स्थापना होनी है? साकारी सृष्टि की स्थापना होनी है। स्वर्ग साकार में बनेगा ना! और साकारी सृष्टि पर ही बनेगा। तो जो बनाने वाला मीडिया है, वो भी कहाँ चाहिए? साकार सृष्टि पर चाहिए। जो गायन है- ब्रह्मा द्वारा नई सृष्टि की स्थापना। तो ब्रह्मा ने तो शरीर छोड़ दिया, साकार मीडिया तो चला गया। इसलिए अव्यक्त वाणी में बोला हुआ है- "ब्रह्मा का पार्ट स्थापना के कार्य में अंत तक नूँधा हुआ है।" (अ.वा.30.6.74 पृ.83 मध्य) ब्रह्मा के पार्ट के बगैर शिवबाबा पार्ट नहीं बजाय सकते। तो 1969 में जब शरीर छोड़ दिया तो क्या शिवबाबा का पार्ट बंद हो गया? नहीं। सन् 70 की अव्यक्त वाणी में ही इसका क्लैरिफिकेशन दे दिया कि वो साकार पार्टधारी बाप अभी भी बच्चों के साथ है साकार में। इसका मतलब है कि ज़रूर कोई ब्राह्मण बच्चा है, जिसमें शिवबाबा प्रवेश करके पार्ट बजाते हैं। वो कौन-सा बच्चा हो सकता? वो ही बच्चे जिनके लिए मुरली में बोला है- "कोई बच्चे थे यज्ञ के आदि में, जो मम्मा-बाबा को भी डायरेक्शन देते थे, ड्रिल कराते थे। शिवबाबा उनमें प्रवेश करके मत देते थे ब्रह्मा-सरस्वती को।" (मु.ता.25.7.67 पृ.2 अन्त) वो ही बच्चे जो आदि में शरीर छोड़ गए कारणे-अकारणे। ब्राह्मण जो एक बार बनता है उसका किया हुआ पुरुषार्थ कभी व्यर्थ नहीं जाता। वो दुबारा जन्म ले करके आता है तो अपने पुरुषार्थ की प्रारब्ध लेकर आता है। तो वो ही आत्माएँ दुबारा यज्ञ में आती हैं और लास्ट सो फास्ट जाती हैं और उनमें प्रवेश करके शिवबाबा अपना पार्ट बजाते हैं। जो आदि सो अंत में ज़रूर प्रत्यक्ष होता है। इसलिए दो रथ बताए हैं- एक टेम्परेरी रथ का भी जिक्र आया है और एक मुकर्रर रथ का भी जिक्र आया है। उस मुकर्रर रथ की तरफ इशारा करते हुए मुरली में बोला है- "ये तो शिवबाबा का रथ ही है जो स्वर्ग की स्थापना करता है।" (मु॰ता॰ 11.1.75 पृ॰3 मध्य) तो वो रथ कौन-सा है जो स्वर्ग की स्थापना करता है? ज़रूर कोई रथ है जो आदि में भी था और अंत में भी होता है। बताया- तुम जानते हो कि हम मनुष्य से देवता बन रहे हैं, फिर से बन रहे हैं। तुम बच्चों की बुद्धि में है कि हर 5000 वर्ष बाद हम आ करके फिर ब्रह्मा द्वारा शिवबाबा के बच्चे बनते हैं वर्सा पाने के लिए। फिर माना क्या होता है? दुबारा। इसका मतलब यज्ञ के आदि में भी कोई सैम्पल हुआ था स्वर्ग का? हाँ, हुआ था। उस समय उसका नाम क्या रखा गया? पाक स्थान। कैसा स्थान? पाक माना पवित्र। अब पाकिस्तान को पाक/पवित्र स्थान कहें, जहाँ मिलेट्री शासन हमेशा ही बना रहता है, खून-खराबा होता ही रहता है? नहीं, बाहर की दुनिया की बात नहीं है। ब्राह्मणों की दुनिया के अंदर, एक ऐसा पाकिस्तान के अंदर स्थान था, जहाँ भल बाहर की दुनिया में खून की नदियाँ बह रही थीं; लेकिन उस संगठन के अंदर अमन-चैन था। इसलिए मुरली में बोला है- "नर्क की दुनिया के बीच मैं तुम बच्चों को स्वर्ग का वर्सा देता हूँ।" (मु.8.6.68 पृ.1 आदि) सन् 47/48 में जब पाकिस्तान बना तो हिंदू-मुसलमानों के बीच में खूनरेज़ी हो रही थी, बाहर की दुनिया में खून-खराबा हो रहा था और जो ब्राह्मण बच्चे थे वो बाप की रहबरी में बड़े शांत और सुख से वहाँ चैन से रहते थे। जिसका मिसाल दिया है- बिल्ली के पूँगरे, आँवाँ में आग लगी और वो बच्चे सेफ रह गए। तो बताया- मैं आ करके देवी-देवता सनातन धर्म की स्थापना करता

हूँ। अब वह धर्म नहीं है। तो फिर बनाना पड़े। तो आदि सनातन देवी-देवता धर्म की फिर से स्थापना करता हूँ और सबको मुक्तिधाम ले जाता हूँ।

भारत प्राचीन खण्ड है। इसलिए भारत की आदमशुमारी वास्तव में सबसे जास्ती होनी चाहिए। चाहिए? फिर है क्यों नहीं? भारत देश में सबसे जास्ती मनुष्य क्यों नहीं हैं भारतवासी? क्योंकि दूसरे-2 धर्मों में कन्वर्ट हो जाते हैं। ऐसी बातें और कोई की बुद्धि में आती नहीं हैं। तुम समझते हो आदि सनातन देवी-देवता धर्म सबसे जास्ती बड़ा होना चाहिए। 5000 वर्ष से उन्हों की वृद्धि होती रहती है। बाकी और तो आते ही हैं 2500 वर्ष के बाद। इस्लामियों की आदमशुमारी कम होनी चाहिए। फिर थोड़े समय के बाद बौद्धी धर्म वाले आते हैं। तो उन्हों में थोड़ा फर्क होना चाहिए। उसमें तो 2500 वर्ष का फर्क है। तो इस्लामियों की आदमशुमारी कम होनी चाहिए, बौद्धियों की उससे कम। बौद्धी आदि पहले कम विकार में जाते थे। और इस्लामी? इस्लामी जास्ती विकार में जाते हैं; क्योंकि तमोप्रधान हैं। तो यह हिसाब-किताब है। जो अनन्य समझदार बच्चे हैं उनको ख्याल रखना पड़े कि स्वर्ग में आबादी कम क्यों होती है और नर्क में आबादी ज़्यादा क्यों हो जाती है। किसी धर्म की आबादी कम है और किसी धर्म में आबादी बहुत ज़्यादा बढ़ जाती है, उसका कारण क्या हुआ? व्यभिचार। संन्यासियों की आबादी बहुत कम, बौद्धियों की आबादी इस्लामियों से कम। क्यों? क्योंकि बौद्धी फिर भी आदि में संन्यास धर्म के होते हैं। घर-गृहस्थ में रहते हुए भी विकारों से उनका संन्यास होता है। तो श्रेष्ठ धर्म होने के कारण उनके कर्म श्रेष्ठ होते हैं। कर्मेंद्रियाँ भी श्रेष्ठ होती हैं, भ्रष्ट आचरण करने वाली नहीं होतीं। इतना फर्क होता है जितना विदेशी धर्म व्यभिचार में आसक्त हो जाते (उनके मुकाबले)। जो अनन्य समझदार बच्चे हैं उनको इन बातों का ख्याल करना पड़े। आजकल लिखते हैं चीनी लोग सबसे जास्ती हैं। क्यों? चीनी धर्म खण्ड कौन-सा धर्म खण्ड है? बौद्धी धर्म खण्ड। तो वो तो कम व्यभिचारी बने थे। आदि से ही वो उतने व्यभिचारी नहीं होते। ये झाड़ के चित्र में दाईं ओर का धर्म दिखाया गया है। वाममार्ग का धर्म नहीं है। दाईं ओर के जितने भी धर्म हैं वो सब ब्रह्मचर्य को पोषण देने वाले हैं और व्यभिचार को नापसंद करने वाले हैं। तो फिर चीनियों की संख्या सबसे जास्ती क्यों हो गई? (किसी ने कुछ कहा-...) हाँ, क्योंकि बौद्धी धर्म है तो श्रेष्ठ, बुद्धिवादी धर्म है। बुद्धिमान बाप के बुद्धिमान बच्चे हैं; लेकिन दूसरे धर्मों के प्रभाव में आ गए और प्रभावित माना प्रजा। यथा राजा तथा प्रजा। तो जिसके प्रभाव में आ गए उसी की प्रजा बन गए और उसी के अनुसार चलना पड़े। तो बौद्धी धर्म पहले गृहस्थमार्ग वाला था। घर-गृहस्थ में रहते पवित्रता उनमें विशेष थी। लेकिन बाद में दूसरे धर्मों का जब प्रभाव पड़ा तो बौद्ध भिक्षुक और भिक्षुणियाँ (स्त्री-पुरुष) एक ही स्थान पर इकट्ठे हो करके रहने लगे और उनमें व्यभिचार फैल गया। तो विदेशी (संस्कृति) के प्रभाव से भारतवासी गिरे हैं। तो चीनी लोगों को ये पता नहीं है क्योंकि सृष्टि का ज्ञान तो है नहीं। यह सब राज़ तुम बच्चों की बुद्धि में हैं। जो पढ़े-लिखे हैं उन्हों को डिटेल में समझाना होता है। और नटशैल में किसको समझाना होता है? जो इतने विशाल बुद्धि नहीं हैं, पढ़े-लिखे नहीं हैं, बूढ़ी माताएँ हैं, उनको

कुछ नहीं याद रहता है तो क्या कहते हैं? बाप और वर्से को याद करो। देवी-देवता धर्म वालों को 5000 वर्ष हुए हैं। तो इस समय उन्हों की संख्या बहुत होनी चाहिए; परंतु देवी-देवता धर्म वाले फिर और-2 धर्मों में कन्वर्ट हो गए हैं। पहले-2 बहुत मुसलमान बन गए। फिर बौद्धी भी बहुत बने। यहाँ भी बौद्धी बहुत हैं। बहुत हैं जो हिंदू से बौद्धी बन गए और क्रिश्चियन्स तो बेशुमार हैं। देवता धर्म का तो नाम ही नहीं है। अगर हम ब्राह्मण धर्म कहें तो भी हिंदुओं की लाइन में डाल देंगे। अभी तुम जानते हो आदि सनातन देवी-देवता धर्म स्थापन हो रहा है। हम ब्राह्मणों द्वारा श्रीमत पर स्थापन हो रहा है। यह भी समझ होनी चाहिए। क्या? कि देवी-देवता सनातन धर्म कोई मनुष्यों की मत पर स्थापन नहीं हो सकता। देहधारी गुरू लोग......। साकार सृष्टि पर बजाया जाता है। तो श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ पार्टधारी परमात्मा ही श्रेष्ठ मत देने वाला है। वो ही श्री-श्री 108 है। देवताएँ श्रेष्ठ मत देने वाले नहीं हैं। तो तुम इस बात को जानते हो कि श्रीमत पर देवता धर्म स्थापन होता है। कोई मनुष्य गुरू की मत पर ये देवता धर्म स्थापन नहीं हो सकता।

धर्म तो गाए जाते हैं ना! यहाँ के मनुष्य अपन को हिंदू की लाइन में ले जाते हैं। कहेंगे हिंदू आर्य धर्म है, सबसे पुराना है। आर्य और अनार्य। भारतवासी पहले-2 आर्य थे। आर्य माना श्रेष्ठ। अब अनार्य बन गए। अनार्य कहो या अनाड़ी कहो। कैसे? अनाड़ी। आर्य और अनार्य। अनार्य से बिगड़ के क्या हो गया? अनाड़ी। पहले भारतवासी बहुत बुद्धिमान थे। अब अनार्य बन गए हैं/अनाड़ी बन गए हैं। कोई अक्ल नहीं। जिसको जो आता है, वह धर्म का नाम रख देते हैं। झाड़ के पिछाड़ी (में) छोटे-2 पत्ते, टाल-टालियाँ निकलती रहती हैं। नए का थोड़ा मान होता है। क्यों मान होता है? नए धर्म का मान क्यों होता है? नई टाली जो निकलती है उनका मान होने का कारण क्या? उस समय सतोप्रधान होती है। बाद में सभी धर्म सतो, रजो, तमो में आते हैं। दुनिया की हर चीज़ इन चार अवस्थाओं में से ज़रूर पसार होती है।

अभी तुम जानते हो हम बाबा से स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। तो ऐसे वर्सा देने वाले बाप को कितना याद करना चाहिए। कैसे बाप को? जिससे हमको स्वर्ग का वर्सा मिलता है। किससे मिलता है? बिंदु से? मुरली में इसलिए क्लैरिफिकेशन दिया है- "निराकार से क्या निराकारी वर्सा चाहिए?" प्रश्न उठता है- निराकार से तो ज़रूर ज्ञान-रत्नों का निराकारी वर्सा मिलेगा। लेकिन चाहिए कौन-सा? विश्व की बादशाही तो साकार में चाहिए ना! तो ज़रूर बीच में दलाल साकार भी होना पड़े। लौकिक बाप से धन का वर्सा मिलता है, साथ-2 फिर पतित बनने का भी वर्सा मिलता है; परंतु ये बाप तो पतित-पावन है। तुम जितना उस पतित-पावन बाप को याद करेंगे, तो वर्सा मिलेगा और तुम पावन भी बनेंगे। तो वह है लौकिक बाप और वह है पारलौकिक बाप। इस पारलौकिक बाप से धन का भी वर्सा मिलता है और पवित्रता का भी वर्सा मिलता है। कौन-से धन का वर्सा मिलता है? जिससे हम वर्सा लेते हैं उसमें निराकार भी समाया हुआ है तो साकार भी समाया हुआ है। तो निराकारी वर्सा ज्ञान-रत्नों का भी मिलता है, ज्ञान-रत्न जिसके पास होते हैं, वो कभी भी कहीं भी भूख नहीं मर सकता; क्योंकि निराकारी बाप का वर्सा है, ज्ञानी जहाँ भी बैठ जाएगा, वहीं उसकी पूजा होगी; क्योंकि

निराकारी बाप के वर्सा का हकदार बन गया। इसलिए मुरली में बोला है- "तुम बच्चे कभी भूख नहीं मर सकते।" (मु.16.10.77 पृ.3 मध्यांत) तो धन का भी वर्सा मिलता है उस पारलौकिक बाप से। जो ज्ञान-रत्न हैं वो ही स्थूल रत्न बन जाते हैं और पवित्रता का भी वर्सा मिलता है; क्योंकि ज्ञान है जल। जैसे जल से कपड़ा साफ होता है वैसे ही इस ज्ञान सूक्ष्म जल से क्या साफ होता है? शरीर रूपी वस्त्र भी साफ हो जाता है। मन-बुद्धि का मैल तो साफ होता ही है पहले। पहले मन-बुद्धि रूपी आत्मा पवित्र बनती है और जिसकी मन-बुद्धि रूपी आत्मा पवित्र बन जाएगी तो उसके संकल्प शुद्धि ज़रूर होगी। संकल्प शुद्धि होगी तो वाचा की भी शुद्धि होगी और वाचा की और संकल्प की शुद्धि होगी तो कर्मेंद्रियों में भी वो शुद्धि ज़रूर आएगी, तो शरीर भी पवित्र बन जाता है।

तो यह बीच में है अलौकिक बाप। इनको बीच में दोनों तरफ से जोड़ दिया जाता है। कौन-से दोनों तरफ से? कौन दोनों तरफ से जोड़ दिया जाता है? स्वर्ग की ओर से और नर्क की ओर से। ऐसा श्यामसुंदर का पार्ट और बजाने वाला किसी धर्म में होता नहीं है। ऐसा काले-ते-काला भुजंग और ऐसा गोरे-ते-गोरा पार्ट बजाने वाला और किसी धर्म में नहीं होता धर्मपिता। जैसा श्यामसुंदर का गायन है। परंतु गलती से श्यामसुंदर का अर्थ गलत लगाय लिया है। क्या? वो समझते हैं इस जन्म में इस शरीर से हैं श्याम दादा लेखराज और अगले जन्म में सतयुग में होगा सुंदर। तो श्यामसुंदर एक व्यक्तित्व का नाम, एक पर्सनालिटी का नाम है या दो पर्सनालिटीज़ का नाम है? दो पर्सनालिटी? (किसी ने कहा- एक ही) श्यामसुंदर एक का नाम है या दो का? एक का नाम है ना! तो एक पर्सनालिटी होगी तो शरीर भी एक ही होगा। एक ही शरीर पहले श्याम होता है, फिर बाद में पुरुषार्थ करते-2 सुंदर बनता है। तो दादा लेखराज का ये गायन नहीं है। दादा लेखराज के स्वरूप का ये श्यामसुंदर का गायन नहीं है। हाँ, दादा लेखराज ब्रह्मा की ही सोल कोई ब्राह्मण बच्चे में प्रवेश करती है, प्रवेश करके पहले काला पार्ट बजाती है, कालों का काल महाकाल, जिसको कोई काल खा नहीं सकता, भयंकर पार्ट बजाती है। नाम शास्त्रों में गाए हुए- महाकाल और सहयोगिनी शक्ति कौन? महाकाली। ये सबके माई-बाप हैं। जो बुरे-ते-बुरे कर्म करने वाले हैं, उनके भी ये माई-बाप हैं। ब्लैक वे में भी बाप तो वाइट वे में भी बाप। इसलिए मुरली में क्या बोलते हैं- "बच्चे, तुम्हारा बाप आया हुआ है।" क्यों बोलते हैं ऐसे? इसलिए बोलते हैं कि तुम अगर अच्छे बनोगे तो बाप तुम्हारे लिए अच्छे-ते-अच्छा पार्टधारी बनेगा और तुम अगर खराब पार्ट बजाओगे, मेरी बात नहीं मानोगे तो समझ लो ये तुम्हारा बाप आया हुआ है। पुरुषार्थ में भी बाप है, तुमको सुधार करके ही छोड़ेगा। इसलिए गायन है करन-करावनहार। पहले सहज पार्ट बजाते हैं, मृदुल पार्ट बजाते हैं करनहार का, ताकि बच्चे सहज रूप में देख करके समझ लें; क्योंकि साकार को देख करके समझना और चलना आसान होता है। बुद्धियोग से कर्मों को खींचना वो थोड़ा कठिन होता है। बुद्धिवादी आत्माओं को ये खास काम दिया जाता है कि बुद्धियोग से खींचो; क्योंकि उनमें भावना कम होती है, बुद्धि ज़्यादा लड़ाते हैं। रावण को दस सिर दिखाए जाते हैं और विष्णु को एक सिर दिखाया जाता है। अंतर ये क्यों? क्योंकि विष्णु

बनने वाली आत्माएँ अपनी बुद्धि नहीं चलाती। एक मत पर चलने वाली होती हैं; और रावण? रावण अनेक मतों पर चलने वाला होता है। इसलिए अनेक मतों के कारण उसको रावण मत कहा जाता है, रुलाने वाली मत। जैसे कोई आदमी कोई रास्ते पर जा रहा हो और एक व्यक्ति मिले कि तुम इस रास्ते पर चलो, भटकाय दिया, फिर दूसरा मिला- इस रास्ते पर चलो, फिर भटकाय दिया, फिर तीसरा मिला- नहीं, इस रास्ते पर चलो तो तुम्हें मंज़िल मिलेगी। तो भटकता रहता है। तो एके साधे सब सधे। एक में बहुत ताकत है। तो बीच में इसको जोड़ दिया है। किसको? अलौकिक रथ में अलौकिक बाप।

शिवबाबा को तो कोई तकलीफ नहीं होती है। इनको कितनी गाली खानी पड़ती है। गाली क्यों खानी पड़ती है? गाली खाने का क्या काम? अरे! कृष्ण काले को गाली क्यों खानी पड़ी? काले कर्म किए होंगे तो गाली खानी पड़ेगी; गोरे कर्म होंगे तो गाली नहीं खा सकता। लक्ष्मी-नारायण की कहीं शास्त्रों में बुराई है? नारायण को कोई गाली देता है? नारायण की शास्त्रों में भी कोई ग्लानि नहीं है। क्यों? क्योंकि नारायण जब बन जाता है, सम्पूर्ण बन जाता है तो गाली देने का कोई सबक ही पैदा नहीं होता। तो हम बच्चे भी जब लक्ष्मी-नारायण समान बन जाएँगे तो हमारे सामने कोई भी विरोध करने वाला नहीं आ सकता, गाली भी कोई नहीं दे सकता। तो बताया- शिवबाबा को कोई तकलीफ नहीं होती है। तकलीफ सारी किसको होती है? जिस रथ में प्रवेश करते हैं। जो भी धर्मपिताएँ आए इस सृष्टि पर, वो सतोप्रधान आत्माएँ आती हैं, उनको कोई तकलीफ नहीं झेलनी पड़ती। जैसे क्राइस्ट को सूली पर चढ़ाया गया तो क्राइस्ट की आत्मा जो ऊपर से आई उसको कोई तकलीफ नहीं हुई। तकलीफ किसको झेलनी पड़ी? जीसस, जिसमें प्रवेश किया। तो ऐसे ही शिवबाबा को कोई तकलीफ नहीं होती। वो जिस तन में आता है उसको ग्लानि का दर्द झेलना पड़ता है। वास्तव में कृष्ण को कोई गाली नहीं मिलती है। बीच में फँसा है यह। क्या? कृष्ण तो मृदुल पार्टधारी आत्मा है। कहते हैं न- रास्ते चलते ब्राह्मण फँसा। गाली खाने के लिए यह फँसा है। अलौकिक बाप को ही सहन करना पड़ता है।

यह किसको पता ही नहीं है कि शिवबाबा इनमें प्रवेश करके आकर पतितों को पावन बनाते हैं। शिवबाबा आ करके पतितों को पावन बनाते हैं। 'आ करके', ऊपर बैठे-2 नहीं बनाय सकते क्या? क्यों? देवताएँ पावन थे, पावन से पतित कैसे बने? स्वर्ग में देवताएँ जो पावन थे, वो पतित कैसे बन गए? दूसरे धर्म की जो आत्माएँ आईं ढेर-की-ढेर, उनके संग के रंग में आ करके जो पावन देवताएँ थे वो भी पतित बन गए; क्योंकि दूसरे धर्म वालों में अव्यभिचार की बात उनकी बुद्धि में होती नहीं। और देवताओं में? देवताएँ तो होते ही हैं अव्यभिचारी। राधा की दृष्टि कृष्ण में ही डूबेगी, कृष्ण की दृष्टि राधा में ही डूबेगी। किसी दूसरे में दृष्टि मात्र भी व्यभिचार नहीं हो सकता। तो दूसरे धर्मों में तो इस बात का कोई ख्याल भी नहीं है। उनके स्वप्न में भी ये बात नहीं आ सकती कि ऐसी भी कोई दुनिया हो सकती है। तो ऐसों के संग के रंग में आ करके भारतवासी नीचे गिरे। तो बड़ी महिमा है संग की और संग तो ज़रूर साकार से ही होता है। साकार में

प्रैक्टिकल में रसगुल्ला खाया होगा तो रसगुल्ले की याद ज़रूर आएगी। जिन्होंने प्रैक्टिकल में मुक्ति-जीवनमुक्ति रूपी स्वर्ग भोगा है वो आत्माएँ ही उसके लिए पुरुषार्थ करेंगी और जिन्होंने वो रसगुल्ला खाया नहीं उनको पता ही नहीं है, वो पुरुषार्थ भी वैसा नहीं करेंगी। तो साकार में ही संग का रंग लगता है। अनेकों का संग का रंग लगने से नीचे गिरे, पतित बने। कर्मेंद्रियों से भी भ्रष्ट बन गए। भ्रष्टाचारी माना भ्रष्ट इन्द्रियों से आचरण करने वाले बने। तो श्रेष्ठाचारी कैसे बनेंगे? जब एक का संग करेंगे तो अव्यभिचारी बन जाएँगे, देवताएँ बन जाएँगे। तो पवित्र बनने पर ही मार खाते हैं। जब पतित-पावन बाप आ करके पावन बनाते। बाप कहते हैं मैं आया हूँ सबको वापस ले जाने के लिए।

तुम जानते हो मौत सामने खड़ा है। विनाश तो ज़रूर होना चाहिए। विनाश बिगर सुख-शांति कैसे होगी? जब कोई लड़ाई आदि लगती है तो मनुष्य यज्ञ आदि करते हैं कि लड़ाई बंद हो जावे। और इस यज्ञ में क्या होगा? इस रुद्र ज्ञान यज्ञ में सारी दुनिया स्वाहा हो जाएगी तब इस यज्ञ की पूर्ण आहुति होगी। इसलिए क्या गायन है? विनाश ज्वाला इस रुद्र ज्ञान यज्ञ से प्रज्ज्वलित हुई। जो सारी दुनिया को लपेट में ले लेती है। जब कोई लड़ाई आदि लगती है तो मनुष्य यज्ञ रचते हैं कि लड़ाई बंद हो। तुम ब्राह्मण कुलभूषण जानते हो- विनाश तो ज़रूर होगा। नहीं तो स्वर्ग के गेट कैसे खुलेंगे? क्या कहा? गेट वे टू हैविन इज़ महाभारत। महाभारी महाभारत युद्ध न हो तो स्वर्ग के द्वार नहीं खुल सकते। विनाश न हो तो स्थापना प्रत्यक्ष नहीं हो सकती। जितने भी धर्मपिताएँ आए वो सुख की सृष्टि क्यों नहीं बना पाए? दुनिया नीचे ही क्यों गिरती रही, नर्क ही क्यों बनती गई? कारण क्या हुआ? कि उन्होंने अपने धर्म की धारणाओं की स्थापना तो की; लेकिन पुरानी मान्यताओं का, पुराने धर्मों का, पुरानी धारणाओं का विनाश नहीं कर सके। इसलिए वो स्वर्ग स्थापन नहीं कर सकते। अंततः दुनिया नर्क ही बनती चली गई। तो स्वर्ग के गेट खोलने के लिए विनाश होना बहुत ज़रूरी है; नहीं तो स्वर्ग की स्थापना प्रत्यक्ष नहीं हो सकती। लेकिन सब तो स्वर्ग में नहीं जाएँगे। जो पुरुषार्थ करेंगे वह चलेंगे। बाकी जावेंगे मुक्तिधाम। यह किसको पता नहीं है इसलिए कितना डरते हैं। किस बात से? विनाश से। शांति के लिए कितना धक्का खाते हैं। पीस कॉन्फ्रेन्स करते रहते हैं। कौन? सिर्फ दुनिया वाले? ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में हर बात की शूटिंग होती है। वो समझते हैं हम ही पीस कॉन्फ्रेन्स करके दुनिया में शांति स्थापन कर लेंगे; लेकिन ये मनुष्यों का काम नहीं है। तुम ब्राह्मण ही जानते हो सुखधाम-शांतिधाम कैसे स्थापन हो रहा है। विनाश के सिवाय स्थापना हो ही नहीं सकती। तुम अभी त्रिकालदर्शी बने हो। क्या जानते हो? कि जब तक इस दुनिया का विनाश नहीं होगा तब तक स्वर्ग स्थापन नहीं हो सकता। क्यों? कारण क्या? अरे! दुनिया में हैं 500 करोड़ मनुष्य और मनुष्यों की तो बुद्धि चलती ही है- या राइट वे में चले या रॉंग वे में चले। मनुष्य ही वायब्रेशन बनाता है, मनुष्य ही वायब्रेशन बिगाड़ता है। वायब्रेशन-वायुमंडल के आधार पर दुनिया के सब प्राणी कंट्रोल्ड होते हैं; क्योंकि उनमें मन-बुद्धि प्रधान नहीं है और मनुष्य में मन-बुद्धि प्रधान है। तो मनुष्य का मन परिवर्तन हो सकता है ईश्वरीय ज्ञान के

आधार पर। लेकिन सबका तो परिवर्तन नहीं होगा; क्योंकि सब तो जीवनमुक्ति में जाते ही नहीं हैं, स्वर्ग में नहीं जाते। मुक्तिधाम में जाने वालों की संख्या ज़्यादा है और जीवनमुक्ति में जाने वालों की संख्या बहुत कम है। जीवनमुक्ति में भी कैटेगरीज़ हैं। कोई 21 जन्म की सम्पूर्ण जीवनमुक्ति पाने वाले हैं माना जीवन के रहते-2 ही दुःख-दर्दों से मुक्ति प्राप्त करते हैं और कोई ऐसे हैं कि जीवन उनका छूट जाता है, फिर दुबारा आ करके जीवन धारण करते हैं और अनेक जन्मों की मुक्ति और जीवन में रहते हुए जीवनमुक्ति धारण करते हैं। तो जीवनमुक्ति पाने वाली आत्माएँ तो बहुत थोड़ी हैं और उनके मुकाबले जो मुक्त होने वाली आत्माएँ हैं उनकी संख्या बहुत ज़्यादा है। इसका मतलब जब तक उनके शरीरों का विनाश नहीं होगा तब तक स्वर्ग प्रत्यक्ष नहीं हो सकता। क्यों? क्योंकि गंदे वायब्रेशन फैलाने वाली मनुष्य-आत्माएँ इस दुनिया में बहुत ज़्यादा हैं और वो गंदे वायब्रेशन जब तक फैलते रहेंगे तब तक वही हालत होती रहेगी जो बाबा बताते हैं कि बच्चे मेरे सम्मुख आते हैं तो बहुत ऊँची स्टेज में चढ़ जाते हैं और माउण्ट आबू से नीचे उतरे और नशा खलास हो जाता है। क्यों? क्योंकि बाहर की दुनिया का वायब्रेशन बहुत खराब है और बोला भी है कि ''दिन-प्रतिदिन दुनिया में गंद बढ़ता ही चला जावेगा।'' आखरीन ये हालत हो जाएगी कि बच्चे बाहर की दुनिया में रह नहीं सकेंगे। कहाँ भागेंगे? बाप के पास भाग खड़े होंगे। अभी भी मन-बुद्धि से बाहर की दुनिया उन बच्चों को अच्छी नहीं लगेगी। उनकी मन-बुद्धि कहाँ रखी रहेगी? मधुबन में बाप के पास रखी रहेगी। तो तुम अभी त्रिकालदर्शी बने हो। तीसरा नेत्र तुमको ज्ञान का मिला है।

वो तो कहते रहते हैं- पीस कैसे होवे? अर्थात् कोई लड़े नहीं, ये पीस हो जाए। कब कहते हैं वननेस हो जाए। सब मिल करके, सब धर्म मिल करके एक हो जाएँ। एक बाप की मत लें कि सब एक बाप के बच्चे भाई-2 हैं, तब तो वननेस हो जाएगी। ये प्रैक्टिकल में होगा या सिर्फ कहने मात्र से हो जाएगा एक बाप के बच्चे? प्रैक्टिकल (शरीर के साथ) में बाप भी होना चाहिए और प्रैक्टिकल में बच्चे भी होने चाहिए। इसलिए मुरली में ये प्रश्न किया है- ''उन ब्राह्मणों से पूछो- तुम अपने को ब्रह्मा की संतान ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण कहते हो, तो तुम्हारा ब्रह्मा बाप कहा है?'' जब ब्रह्मा बाप का ही पता नहीं, वो सूक्ष्मवतन में उड़ गया, तो वननेस कहाँ पैदा होगी? इस दुनिया में वननेस पैदा हो सकती है फिर? नहीं पैदा हो सकती। जो कहते हैं- हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सब आपस में भाई-2। ये कहावत भी कहाँ से है? इस दुनिया में तो हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई एक नहीं हो सके। फिर ये कहावत कहते कहाँ की है? यादगार कहाँ की है? ज़रूर इस सृष्टि पर परमात्मा बाप प्रैक्टिकल में आया है और आ करके उसने इस्लाम धर्म, बौद्धी धर्म, क्रिश्चियन धर्म और देवता धर्म/सनातन धर्म, इनकी जो मूल बीजरूप आत्माएँ हैं, उनको आ करके भाई-2 बनाया है। 4 मुख्य धर्म हैं, चारों धर्मों के जो मूल बीज हैं, वो एक बन जाते हैं, एक बाप के बच्चे, आपस में भाई-2 प्रैक्टिकल में बनते हैं। तब ही भ्रातृत्व भावना पैदा होगी; अन्यथा पैदा नहीं हो सकती। एक बाप के बच्चे हैं तो आपस में लड़ना नहीं चाहिए। क्या कहा? वर्तमान की स्टेज देखना चाहिए। अगर ब्रह्मा के चार

पुत्र माने गए हैं- सनत, सनातन, सनंदन, सनतकुमार। अगर चारों पुत्र आपस में लड़ते हैं, चाहे वाचा से लड़ते, चाहे संकल्पों से युद्ध करते हैं और चाहे कर्मेंद्रियों से हाथापाई करते हैं, तो क्या कहा जाएगा- एक बाप के बच्चे बने? नहीं कहा जा सकता। तो लड़ना नहीं चाहिए आपस में। यह भी तो सतयुग में ही था। वहाँ कोई भी आपस में लड़ते नहीं थे। वो तो सतयुग की बात हो गई। यहाँ तो है कलियुग। बरोबर सतयुग में देवी-देवताएँ थे। बाकी सब आत्माएँ कहाँ थीं? वो पता ही नहीं पड़ता। तुम अब समझते हो एक ही वननेस का राज्य था। भल हम मूलवतन जाते हैं तो भी कुछ यहाँ रहते हैं। कुछ माना? नौ लाख सितारे जो गाए जाते हैं चमकने वाले कयामत के समय में, वो ही परमात्मा के गले के असली हार बनते हैं। इसलिए नौ लखा हार गाया हुआ है। तो कहाँ 500 करोड़ और कहाँ नौ लाख, तो कुछ ही कहे जाएँगे। (तो उत्तर)- परमधाम में सब जा करके इकट्ठे नहीं होते। कुछ (नं.वार) यहाँ भी रहते हैं। एक राज्य सिर्फ सतयुग में ही था, वहाँ सुख-शांति थी। यह सब बातें तुम्हारी बुद्धि में हैं। नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार समझते हैं बरोबर वहाँ हम सतयुग में राज्य करते थे। बहुत सुख था, अद्वैत धर्म था। माना? एक ही धारणा थी सबकी। जो बाप का संकल्प सो बच्चों का संकल्प था। यह ज्ञान किसको नहीं। इस समय तुम नॉलेजफुल बनते हो। बाप तुमको आप समान बनाते हैं। जो बाप की महिमा वही तुमको बनना है। सिर्फ दिव्य दृष्टि की चाबी बाप के पास रहती है। तुम फिर विश्व के मालिक बनते हो। कुछ बच्चों को बड़ा बनाया है, कुछ अपने को। फर्क सिर्फ यह है कि दिव्य दृष्टि की चाबी और किसी को नहीं देता। यह मेरे पास रहती है। बाप ने बताया है- भक्तिमार्ग में मुझे बहुत काम करना पड़ता है। इसलिए ये चाबी मैं तुमको नहीं दे सकता। जो जिसकी पूजा करते हैं मैं उनकी मनोकामना पूरी करता हूँ। यहाँ भी दिव्य दृष्टि का पार्ट चलता है। कहते हैं ना अर्जुन ने विनाश का साक्षात्कार किया।

विनाश भी ज़रूर होना है। विष्णुपुरी भी ज़रूर स्थापन होनी है। बाप ने जैसे कल्प पहले समझाया था वैसे ही बैठ करके समझाते हैं। बाबा हमको मनुष्य से देवता बनाते हैं। जब देवता बनते हैं तो आसुरी सृष्टि का विनाश ज़रूर होगा। क्या कहा? पहले विनाश होगा कि पहले देवता बनेंगे? (किसी ने कहा- देवता बनेंगे) पहले स्थापना होती है देवता धर्म की। वो राजधानी जब तक स्थापन नहीं हुई है, भले छोटे रूप में ही क्यों न हो। राजधानी में सबसे पहले कौन चाहिए? पहले तो महाराजा-महारानी चाहिए। वो महाराजा-महारानी अपनी छोटी-सी फैमिली के माध्यम से जब तक प्रत्यक्ष नहीं होते हैं तब तक विनाश नहीं हो सकता। चारों तरफ हाहाकार मच जाना है। बुद्धि समझ सकती है- नैचुरल कैलेमिटीज़ आनी हैं। मूसलाधार वर्षा भी होनी है। इन सबका विनाश हो तो सतयुग की स्थापना हो। सबका माना किनका? जो भी दूसरे-2 धर्म हैं। जो मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर, गुरुद्वारे आदि खोले बैठे हैं। ये अनेकता खलास हो जाए। अनेक मत खलास हों और एक मत की स्थापना हो। कहाँ? बाहर की दुनिया में? पहले ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में ऐसा हो। बाप कहते हैं- इस रुद्र ज्ञान यज्ञ में ये सब स्वाहा हो जाएगा। 5 तत्वों को भी खाद मिल जाएगी। इस धरती को खाद देखो कितनी मिलती है।

भक्तिमार्ग में देखो रुद्र यज्ञ कैसे बनाते हैं। शिवबाबा का लिंग और छोटे-2 शालिग्राम बहुत बना करके पूजा करके फिर मिटाय देते हैं। शालिग्राम छोटे-2 बनाते हैं और लिंग बहुत बड़ा बनाय देते हैं। क्यों? कहाँ की यादगार? ज़रूर संगमयुग में ऐसे पीरियड की ही यादगार है शास्त्रों में, जो भक्तिमार्ग में चली-2 आ रही है। छोटे-2 शालिग्रामों का मतलब छोटा पार्ट बजाने वाले और बड़ा लिंग बनाने का मतलब बड़ा पार्ट जिसने बजाया, आत्मिक स्टेज में रहने का प्रैक्टिकल पार्ट; क्योंकि वो परमात्मा है एवरप्योर। एवरप्योर को भी दुनिया तब तक नहीं मानेगी जब तक उसका प्रैक्टिकल प्रूफ न हो- आखिर एवरप्योर कैसे हैं? तो लिंग बड़ा बनाते हैं और शालिग्राम छोटे-2 बनाते हैं। फिर पूजा करके उनको मिटाय देते हैं। क्या मिटाय देते हैं? जो मिट्टी के शालिग्राम बनाए उनको तोड़ देते हैं। मिट्टी माना देह-अभिमान की मिट्टी। फिर रोज़ बनाते हैं और रोज़ तोड़ते हैं। माना? रोज़ रुद्र यज्ञ रचते हैं और रोज़ शालिग्रामों को और शिवलिंग को तोड़ते रहते हैं। तोड़ने का मतलब क्या हुआ? सोमनाथ के मंदिर को, भक्तिमार्ग में पत्थर को तोड़ दिया वहाँ और यहाँ शूटिंग क्या होती है? मनुष्य को कैसे तोड़ा जाता है? अगर उसका दिल टूट जाए तो क्या कहेंगे? टूट गया। टूट गई है माला, मोती बिखर गए...। (ओमशांति)